नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

हिंदी विश्वविद्यालय में मनाया विश्व हिंदी दिवस

विभिन्न संस्कृतियों को मिलाकर हिंदी को करें प्रवाहित-प्रो. आनंद वर्धन शर्मा

भारत सहित थाईलैण्ड, गयाना, कजाकिस्तान के विद्यार्थी हुए शामिल

वर्धा, 10 जनवरी 2019 : देश और विदेशों की विभिन्न संस्कृतियों को मिलाकर हिंदी भाषा को विश्व में प्रवाहित करने तथा प्रचार–प्रसार करने की आवश्यकता है। समान संस्कृति एवं शब्दों के आदान-प्रदान से हिंदी को और बल मिलेगा। उक्त उदबोधन महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कार्यकारी कुलपति प्रो.

आनंद वर्धन शर्मा ने दिए। वे विश्वविद्यालय के आनंद के. कुमारस्वामी अंतरराष्ट्रीय भाषा एवं संस्कृति संस्थान की ओर से गुरुवार, 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस समारोह की अध्यक्षता करते हुए बोल रहे थे। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय में अध्ययनरत थाईलैण्ड, गयाना एवं कजाकिस्तान के विद्यार्थियों ने हिंदी में गीत, भाषण आदि की प्रस्तुतियां दी। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. उमेश कुमार सिंह ने विदेशों में हिंदी शिक्षण के अपने अनुभवों को सांझा किया। मुख्य वक्ता के रूप में अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रोफेसर देवराज ने अपनी बात रखी। स्वागत वक्तव्य प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल ने दिया।

गुरुवार को गालिब सभागार में दीप प्रज्ज्वलन से कार्यक्रम का प्रारंभ किया गया। स्वागत वक्तव्य संस्थान के निदेशक प्रो. हनुमानप्रासाद शुक्ल ने दिया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में 2006-07 से विदेशी

शिक्षण कार्यक्रम शुरू हुआ और अभी तक 24 से अधिक देशों के विद्यार्थियों ने यहां से हिंदी के विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश लिया है। विश्व भर के 13 विश्वविद्यालयों के साथ हिंदी विश्वविद्यालय ने अनुबंध किये है

तथा इसके माध्यम से हिंदी के प्रचार-प्रसार को गति प्राप्त हो रही है। उन्होंने आनंद के. कुमारस्वामी अंतरराष्ट्रीय भाषा एवं संस्कृति संस्थान की स्थापना को लेकर कहा कि 20वीं शताब्दी में तमिलनाडु मूल के श्रीलंका के महान अध्येता रहे कुमारस्वामी ने भाषा शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया है। उन्होंने इतिहास, कला, धर्म, संस्कृति आदि विषयों का अध्ययन कर 50 से अधिक ग्रंथ लिखे हैं। उनके नाम पर

विश्वविद्यालय ने एक स्वतंत्र संस्थान की स्थापना की है। विश्वविद्यालय की विकास यात्रा में यह मिल का पत्थर साबित होगा।

अध्यक्षीय उदबोधन में प्रो. शर्मा ने आगे कहा कि सांस्कृतिक समानताओं को खोज कर विभिन्न देशों की संस्कृतियों के अंतर्संबंधों के माध्यम से हमें हिंदी भाषा का विस्तार कर सकते हैं। मुख्य वक्ता प्रो. देवराज ने कहा कि हिंदी भाषा को विश्व में स्थापित करने के अनेक प्रयास किये जा रहे है। संयुक्त राष्ट्र भी अपनी ओर से प्रयासरत है। उन्होंने आहवान किया कि तकनीक और प्रौद्योगिकी के स्तर पर हिंदी भाषा का प्रयोग करें। उन्होंने कहा कि अन्य भाषाओं के विकास में हिंदी सहायक बने इसके लिए प्रयास होने चाहिए।

कार्यक्रम में तुलनात्मक साहित्य विभाग के डॉ. उमेश कुमार सिंह ने विदेशों में आए अनुभवों को सांझा करते हुए कहा कि संस्कृति और भाषा को जीवित रखने के लिए उसका प्रचार-प्रसार आवश्यक है और अनेक देश हिंदी की पत्रिकाएं चलाकर इस दिशा में कार्य कर रहे हैं। कार्यक्रम में गयाना के धनपाल मोहन, थाईलैण्ड की पदमा, शिरारत और सिसमोर्न, कजाकिस्तान की गुलशाद और सुपिग्या आदि विद्यार्थियों ने हिंदी में भाषण, गीत और संगीत से अपनी प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम का संचालन विजया सिंह ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. राजीव रंजन ने किया। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया। इस अवसर पर प्रो. प्रीति सागर, डॉ. राजीव रंजन राय, प्रो. अखिलेश दुबे, प्रो. फरहद मलिक, प्रो. नृपेंद्र प्रसाद मोदी, डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी, डॉ. अमरेंद्र शर्मा, डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी, डॉ. सुहासिनी बाजपेयी, शिल्पी कुमारी, धर्मेंद्र शंभरकर, डॉ. रूपेश कुमार सिंह, डॉ. शंभू जोशी, संदीप सपकाले, डॉ. मुन्नालाल गुप्ता, डॉ. अश्विनी सिंह, बी. एस. मिरगे आदि सहित अध्यापक, अधिकारी, शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।